

Vol.11 February18 No.7
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण **BRAHMARPAN**

वेदोऽखिलो
धर्ममूलम्

A Monthly publication of
Brahmasha India Vedic
Research Foundation



Brahmasha India Vedic Research Foundation

ब्रह्मशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

ATAL'S CONTRIBUTION TO POLITICS AND PARLIAMENT

On the day he was awarded Bharat Ratna, several BJP leaders showered laurels on Atal Bihari Vajpayee-the first BJP leader to become a Prime Minister: Calling Vajpayee a wordsmith who could play with words and remain measured, finance minister Arun Jaitley said he never fell into the temptation of committing an impropriety and realised virtues of social harmony. "His ability to rise above the party for a larger national cause was significant," Jaitley wrote in an article on the eve of Vajpayee's 90th birthday.

Addressing him as a product of democratic system and trained in parliamentary value, Jaitley said Vajpayee realised the virtues of both consensus and harmony." "His conduct of the Cabinet meetings was never tense. If any of us raised any point, or even contradicted a point, he encouraged discussion. The last word, of course, belonged to him," he said.

The FM argued that his 'bus initiative' with Pakistan was undertaken at a great political risk, since his own constituency had to be convinced of this.

BJP veteran L K Advani, Vajpayee's comrade-in-arms for several decades, also welcomed the decision but regretted that the Manmohan Singh Government ignored his 2008 request to give Vajpayee the award. "If I was to think of all persons who had been Prime Minister and draw up a balance sheet of their achievements and shortcomings, I would think Vajpayee was the only one with a term without blemish and shortcomings," Advani said.

Assam Chief Minister Tarun Gogoi, JD(U) chief Sharad Yadav former Bihar CM Nitish Kumar Trinamool Congress' Derek O'Brien were prominent non-BJP leaders who hailed the decision.

The Congress congratulate Vajpayee but at the same time also raked up his "rajdharm remarks made after the Godhra riots in Gujarat. AICC communication department chairman Ajay Maken said that they expect that the NDA government would follow the path of 'rajdharm and secularism shown by the Democracy.



**BRAHMASHA INDIA VEDIC
RESEARCH FOUNDATION**

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058

Tel :- 25525128, 9313749812

email: deekhal@yahoo.co.uk

brahmasha@gmail.com

Website : www.thearyasamaj.org

of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul

Secretary

Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597

President

Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)

V.President

Dr. Mahendra Gupta V.President

Ms. Deepti Malhotra

Treasurer

Editorial Board

Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor

Dr. Harish Chandra

Dr. Mahendra Gupta

Sh. Shiv Kumar Madan

लेख में प्रकट किए विचारों के
लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं
है। किसी भी विवाद की
परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली
ही होगा।

Printed & Published by

B.D. Ukhul for Brahmasha India

Vedic Research Foundation

Under D.C.P.

License No. F2 (B-39) Press/
2007

R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062

Price : Rs. 10.00 per copy

Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan February'18 Vol. 11 No.7

माघ-फाल्गुन 2074 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण BRAHMAPAN

A bilingual Publication of Brahmasha
India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. आज की आवाज़
-महाशय चन्द्रभान 2
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
-डॉ. भारत भूषण
4. सूर्योपासना का पर्व : मकर-संक्रान्ति
-ब्रजेन्द्र सिंह 8
5. 'केनोपनिषद्' का पावन संदेश 11
-डॉ. सुशील गुप्ता
6. श्राई परमानन्द और वीर सावरकर
-सुरक्षित गोस्वामी 16
7. किसी गज से नापिए बड़ा ही पाएंगे
महामना को 20
(25 दिसम्बर, जिनकी जयंती है)
-पं. जवाहरलाल नेहरु
8. स्वामी श्रद्धानन्द की शहादत और
महात्मा गाँधी 25
-नरेन्द्र शर्मा
9. सरदार पटेल और अम्बेडकर संवाद 27
10. हिन्दू जाति की चिकित्सा आवश्यक 29
-भाई परमानन्द
11. Salute To The Spirit Of R-Day 32
-Kavita Nayar
12. Atal's Contribution To Politics
And Parliament 34

संपादकीय

गुजरात के चुनाव में मोदी का जादू चल गया

-भारत भूषण विद्यालंकार

गुजरात चुनाव में न तो भारतीय जनता पार्टी की भारी जीत हुई, न कांग्रेस की करारी हार। यों गुजरात का चुनाव कई मायनों में अहम था। यह चुनाव अपने पीछे कुछ महत्वपूर्ण संदेश छोड़ गया है। एक तो गुजरात में 22 वर्षों तक लगातार सत्ता में बने रहने के कारण बीजेपी को पहली बार सत्ताजनित नाराजगी का सामना करना पड़ा। यदि मोदी ने स्वयं चुनाव अभियान का दायित्व न संभाला होता और आक्रामक रवैया न अपनाया होता तो यह नाराजगी ज्यादा नुकसान पहुँचा सकती थी। मोदी इस जीत को चाहे विकास की जीत कहें परन्तु परिणाम से यह बात साफ़ हो गई है कि विकास का मुद्दा चुनाव के दौरान नहीं चल पाया, यह चुनाव के नतीजों से स्पष्ट प्रतीत होता है।

दूसरे इस चुनाव में जातीय आंदोलनों का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई दिया। पाटीदार, ओबीसी और दलित आंदोलनों के द्वारा सामाजिक समीकरणों का नया रूप सामने आया। हार्दिक पटेल, अल्पेश ठाकोर और जिग्नेश मेवाणी की तिकड़ी गुजरात की राजनीति में स्थापित होने में कुछ हद तक सफल हो गई। इन तीनों वर्गों के वोटों का कुछ प्रतिशत कांग्रेस को परिवर्तित हुआ जिससे उनकी सीटों की संख्या में निश्चित रूप से वृद्धि हुई। इसमें इन वर्गों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। चुनाव से पूर्व नोटबंदी और जीएसटी से नाराजगी की आशंका थी, इस विषय में सूरत से व्यापारियों ने बड़े प्रदर्शन भी किए थे परन्तु चुनाव के परिणामों से ऐसा नहीं लगता कि जीएसटी से कोई परेशानी हुई है। सूरत में बीजेपी को बड़ी जीत मिली।

इसकी वजह चुनाव से पहले जीएसटी में किए गए परिवर्तन हो सकते हैं।

इस बार चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की स्थिति शहरों में मजबूत परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर दिखाई दी। इसलिए उसकी जीत का आधार शहरी मतदाता रहे। अहमदाबाद और सूरत जैसे शहरों में बीजेपी को जिताने में निर्णायक भूमिका अदा की। ग्रामीण क्षेत्रों में खराब प्रदर्शन का कारण जातीय वर्गों का प्रभावी होना माना जाता है।

जब मतगणना हो रही थी तो बीच में ऐसा भी समय आया जब काँग्रेस बीजेपी से आगे निकलती दिखाई दे रही थी। ऐसी स्थिति में सेंसेक्स में गिरावट आने लगी थी। इससे पता चलता है कि यदि गुजरात में बीजेपी हार जाती तो आर्थिक सुधारों की गति पर अवश्य प्रभाव पड़ता। अब बीजेपी की जीत के बाद यह देखना है कि प्रधानमंत्री आर्थिक सुधारों की गति को बनाए रखने के लिए कैसी रणनीति अपनाते हैं? इस चुनाव में शहरी वोटर्स ने बीजेपी को बचा लिया। अतः भविष्य में बीजेपी को ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देना होगा।

हार्दिक पटेल, अल्पेश ठाकोर और जिग्नेश मेवाणी के पाटीदार, दलित और ओबीसी के वोट काँग्रेस का समर्थन करके बीजेपी को हराने के लिए प्रयत्नशील थे। जिसमें कुछ हद तक वे सफल भी रहे। अब इनकी नजर 2019 के चुनाव पर है। इसके लिए बीजेपी को सावधान होना होगा। अब तीनों वर्ग अलग-अलग शक्ति-परीक्षण करना चाहेंगे। यदि बीजेपी इस चुनाव में हार जाती तो 2019 के लोकसभा चुनाव को जीतना कठिन होता। परन्तु परिणामों से बीजेपी को राहत मिली। हार के कारण बीजेपी में मोदी-शाह के विरुद्ध पार्टी में आवाज उठ सकती थी परन्तु अब मोदी और सशक्त होंगे।

अगले साल तीन बीजेपी शासित राज्यों में भी चुनाव है। इनमें बीजेपी को सत्तासीन होने के कारण इन्कबेन्सी फैक्टर को नज़रअंदाज नहीं करना होगा।

इस चुनाव से राहुल का हौसला बढ़ा है और विपक्ष को राहुल गाँधी के रूप में चेहरा मिल गया है। काँग्रेस 22 साल से सत्तासीन बीजेपी को पराजित तो नहीं कर पाई परन्तु राहुल ने स्थानीय मुद्दों और विकास के मुद्दों को कुछ ऐसे उठाया कि गुजरात में काँग्रेस हार कर भी नैतिक दृष्टि से जीतती दिखाई दी। इससे काँग्रेस भावी चुनावों में नैतिक जीत से लाभ उठाने का प्रयत्न करेगी।

गुजरात में जैसे राहुल गाँधी लोगों का भरोसा पाने में सफल हुए हैं उसका लाभ भविष्य में वे विपक्षी एकता को बनाए रखने और मोदी को चुनौती देने में कर सकेंगे। इस चुनाव ने राहुल को प्रतिष्ठित नेता बना दिया। लगातार हार का मुँह देख रही काँग्रेस ने गुजरात में मोदी जैसे दिग्गज नेता को टक्कर दी। यह उस राहुल के नेतृत्व में हुआ जिस पर भीतर-बाहर से सवाल उठते रहे हैं।

गुजरात और हिमाचल के चुनाव परिणामों के राष्ट्रीय राजनीति के लिए कई संदेश छिपे हैं। गुजरात के चुनाव को राष्ट्रीय राजनीति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है और कहा जा रहा है कि मोदी का जादू आज भी बरकरार है और वे जनता का भरोसा जीतने में सफल रहे, इसके लिए उन्होंने गुजराती अस्मिता को भी दाँव पर लगा दिया।



सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-121)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

पूर्व सूत्र में उक्त प्रकार का अनुभव साधारण लौकिक जनों को तो होता नहीं, अपितु इसके विपरीत प्रतीति के उदाहरण मिलते हैं। तब शास्त्रकार के कथन को किस प्रकार सत्य मान लिया जाए? इस संबंध में सूत्रकार के कथन को निम्नलिखित सूत्र में व्यक्त किया गया है ; सूत्र है-

नान्धादृष्ट्या चक्षुमतामनुपलम्भः ॥१२१॥

अर्थ- (अन्धादृष्ट्या) अन्धे के द्वारा न देखे जाने से (चक्षुष्मतां) आँखों वालों का (अनुपलम्भः) अनुपलब्धि - न देखा जाना (न) नहीं।

भावार्थ- यदि अन्धा व्यक्ति किसी वस्तु को नहीं देख सकता, तो इसका मतलब यह नहीं कि आँख वालों के लिए भी उस वस्तु की अनुपलब्धि है। साधारण लोग यदि आत्माओं की समान चेतना का अनुभव नहीं कर पाता या विपरीत अनुभव करता है, तो उसका यह तात्पर्य नहीं कि साधन संपन्न व्यक्ति भी उसको नहीं जान सकता। इसीलिए आत्माओं की समान चेतना के वर्णन की भावना से ही वेद में जहाँ-तहाँ आत्मा की एकता का उल्लेख है। वस्तुतः आत्मा अनेक हैं यह विचार सभी प्रकार के प्रमाणों से सिद्ध है। ॥१२॥

दी हिबिस्कस,

बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी

सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009

फोन-0124-4948597

सूर्योपासना का पर्व : मकर-संक्रान्ति

-ब्रजेन्द्र सिंह झाला

विक्रम संवत् 2074 का मकर-संक्रान्ति पर्व, 14 जनवरी 2018 को बड़े हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। यह पर्व भारतीय ज्योतिष विद्या के अनुसार वैदिक विज्ञान की श्रेष्ठ उपलब्धि होते हुए वर्तमान वैज्ञानिकों के सम्मुख भारत के महान् ऋषियों की ज्ञान-गरिमा की अमिट छाप है। विषुवत् रेखा, जिसने पृथ्वी को दो गोलाद्धों में विभाजित किया है, उत्तरी गोलाद्ध में 23 अक्षांश की रेखा को कर्क रेखा और दक्षिणी गोलाद्ध को 23 अक्षांश की रेखा कहलाती है। इन दोनों रेखाओं को कर्क अयन और मकर अयन भी कहा जाता है। अयन का अर्थ है - प्रवेश। अर्थात् कर्क से मकर में सूर्य का प्रवेश है, इसीलिए इस क्षेत्र को उष्ण कटिबन्ध के नाम से पुकारा जाता है। पृथ्वी का यह क्षेत्र अपने परिभ्रमण सिद्धान्त के अनुसार सूर्य के सामने बना तो रहता है, परन्तु जब उत्तरी गोलाद्ध का भाग सूर्य के सामने होता है तो इसे सूर्य का उत्तरायण कहा जाता है और जब दक्षिण गोलाद्ध का भाग सूर्य के सामने होता है तो इसे सूर्य का दक्षिणायण कहा जाता है। प्रतिवर्ष 14 जनवरी को ही सूर्य का दक्षिणायण समाप्त होकर उत्तरायण का प्रारंभ होता है। यही दिन भारतीय गणना के अनुसार मकर-संक्रान्ति का दिन माना गया है। मकर संक्रान्ति अर्थात् सूर्य का मकर वृत्त को संक्रमण करना कहा गया है। इसी मकर-संक्रमण के दिन को 'मकर संक्रान्ति' पर्व मनाया जाता है। वर्तमान में यह पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को ही होता है। यह भारतीय मनीषियों के ज्ञान-विज्ञान की महान उपलब्धि है, जिस पर हमें गर्व है। यह तो है हमारी वैज्ञानिक-पक्ष की महान् उपलब्धि, जिसे तत्त्वदर्शी ऋषियों ने धर्म से जोड़कर हमारे

आचरण की दिशा निर्धारित की है। ईशावास्योपनिषद् के मंत्र 16 के अनुसार- “हे जगत्पोषक सूर्य। एकाकी गमन करने वाले। हे यम। (संसार का नियमन करने वाले), तू अपनी किरणों को हटा ले (अपने तेज को समेट ले), तेरा जो अतिशय कल्याणमय रूप है, उसे मैं तुझ आत्मा की कृपा से देखता हूँ। यह जो आदित्य मण्डलस्थ पुरुष है, वह मैं हूँ।” इस आधार पर सूर्य समस्त जड़-चेतन की आत्मा है। वह हमारे आत्मीय सूर्य हम उत्तरी-गोलाब्ध के निवासियों से दूर-दूर, बहुत दूर दक्षिण की ओर प्रस्थान करते जा रहे थे। अब वे अपनी दक्षिण-यात्रा के अंतिम छोर अर्थात् मकर वृत्त तक पहुँच गए हैं। आज हम आनन्द विभोर हैं क्योंकि वे आज मकर वृत्त का संक्रमण कर हमारी ओर अर्थात् उत्तर की ओर अपनी यात्रा प्रारंभ कर रहे हैं। ‘मकर-संक्रान्ति’ का यह पर्व इसी हर्षोल्लास का प्रतीक है। आज वे तिल भर ही सही, आगमन की मिठास का अनुभव कर रहे हैं। तिल-गुड़ खा रहे हैं और खिला रहे हैं।

योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽहम्। अर्थात् जो आदित्य में आत्मा है, वे तुम ही हो। यह जानकारी देकर शास्त्र ने हमें सूर्य से जोड़ दिया है। तात्पर्य यह हुआ कि जिस प्रकार सूर्य ब्रह्माण्ड का केन्द्र है, सम्पूर्ण ग्रह उसी के चारों ओर परिभ्रमण कर रहे हैं- उसी प्रकार हमारा सम्पूर्ण शास्त्र, हमारी सम्पूर्ण संस्कृति सूर्य-संस्कृति मानी जा सकती है। गीता के शब्दों में - मैंने इस अविनाशी योग को सूर्य से कहा था, सूर्य ने अपने पुत्र वैवस्वत मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से कहा। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त इस योग को राजर्षियों ने जाना।” अब से सूर्य हमारी ओर प्रस्थान कर रहा है। आवश्यकता है वृत्त धारण करने की, शिव संकल्प करने की, इस संस्कृति के रक्षण की। सम्पूर्ण स्वार्थ, सम्पूर्ण

संकीर्णताएँ, भाषाभेद, जातीय सीमा, साम्प्रदायिक मतभेद आदि सभी से ऊपर उठकर भारत और इसकी महान संस्कृति की रक्षा करने तथा इसके दुश्मनों को समाप्त करने की हमें प्रतिज्ञा लेनी होगी। भारत पर दुश्मनों के हमले हो रहे हैं, इस सत्य से तो सभी परिचित हैं और दुश्मनों की भी जानकारी है, परन्तु संस्कृति पर हमला करने वालों की जानकारी आवश्यक है। अन्य धर्मावलम्बी तो घात लगाए बैठे ही हैं, परन्तु हमारे भाईबन्ध भी जयचन्द्र की भूमिका निभा रहे हैं। संस्कृति को तोड़-मरोड़कर वास्तविकताओं को छिपाकर, इतिहास को दूषित कर युवा पीढ़ी को गुमराह कर रहे हैं। इस पर प्रहार आवश्यक है।

भारत और भारतीयता के पहरदारो! सांस्कृतिक युद्ध प्रारंभ हो चुका है। इसकी रक्षा पंक्ति में सम्मिलित होकर आगे बढ़ो। सूर्य की तेजस्विता धारण करो। प्रखर बनो। किसी की प्रतीक्षा मत करो। तुम स्वयं मार्गदर्शक बनो, सैनिक बनो और प्रहार करो। सांस्कृतिक-वैचारिक जागरण तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। उत्तरायण की ओर आता हुआ सूर्य तुम्हारे प्रयासों को सफलता के आलोक से प्रकाशित कर देगा।

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:

1. Sh. Anand Kumar, E-4, Kitchlu Nagar, Ludhiana, Punjab
Rs. 500/-
 2. Ms. Anju Sharma, KG-II/173, Vikaspuri, N. Delhi. Rs. 1000/-
 3. Sh. Chandra Datt, DA/99B, Hari Nagar, Delhi-64 Rs.500/-
- Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

‘केनोपनिषद्’ का पावन संदेश

-प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट्.

वैदिक वाङ्मय में जिन ग्यारह उपनिषदों को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है, उनमें ईशावास्योपनिषद् के बाद ‘केनोपनिषद्’ का उल्लेख है। क्रमत्व को यदि महत्त्व का निर्धारक माना जाये, तो इससे ‘केनोपनिषद्’ का महत्त्व भी स्पष्ट होता है। इस उपनिषद् में आत्मा और ब्रह्म विषयक गूढ़ ज्ञान के साथ उपनिषद् क्या है, इसे भी स्पष्ट किया गया है। चार खंडों में विभाजित इस उपनिषद् का प्रारंभ ‘केन’ शब्द से होता है, इसी कारण इसे ‘केनोपनिषद्’ कहा जाता है।

इस उपनिषद् के प्रथम खंड में ‘केनेषितं पतति प्रेषितं मनः.

.....’ के द्वारा शिष्य गुरु से प्रश्न करता है कि मन, प्राण, वाणी, चक्षु और श्रोत्र आदि अपना-अपना कार्य किस देव की प्रेरणा से करते हैं? गुरु ने उत्तर दिया- इन सब इंद्रियों का प्रेरक आत्मा है। आत्मा चेतन है, ज्ञान स्वरूप है और उसी की चेतन सत्ता का प्रकाश इंद्रियों में होता है। जो आत्मा के इस स्वरूप को जान जाते हैं और आत्म-सत्ता के दृढ़ विश्वासी हो जाते हैं, वे मृत्यु लोक से छूट कर अमृतत्व को प्राप्त कर लेते हैं।

आत्मा के इस वर्णन के बाद गुरु ने शिष्य को अगोचर, अनिर्वचनीय, अगम्य, अचिन्त्य, निराकार, बंधनरहित, ज्ञानस्वरूप, सर्वशक्तिमान, पूर्ण ब्रह्म को जानने की प्रेरणा दी तथा यह बतलाया कि उस ब्रह्म तक न आँख पहुँचती है, न वाणी, न मन ही। ब्रह्म का सम्पूर्ण वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता, तर्कों से उसे नहीं जाना जा सकता, क्योंकि ब्रह्म वाणी से प्रकट नहीं होता, अपितु वाणी उससे प्रकाशित होती है। मन से भी उसका पूरा-पूरा चिन्तन नहीं किया जा सकता-उसकी संपूर्ण कल्पना में मन असमर्थ है, क्योंकि मन को संकल्प-विकल्प की शक्ति ब्रह्म ने ही दी है और मन उसी ब्रह्म से प्रकाशित है। परमेश्वर मन की दौड़ से बाहर है। ज्ञानवृत्ति से बाहर होते

हुए भी जो स्वयं ज्ञानस्वरूप है, तू उसी को ब्रह्म जान। जो कान से नहीं सुनता, किन्तु जो श्रोत्रन्द्रिय का कर्ता है, तू उसी को ब्रह्म जान। जो प्राणों से नहीं जीता, किन्तु जो प्राण हे तू उसी को ब्रह्म जान। अभिप्राय यह है कि वह ब्रह्म अशरीरी और निराकार है तथा सभी इन्द्रियों का नियन्ता है। उसी निराकार ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। साकार ब्रह्म के उपासक भ्रम में हैं और वे ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते।

दूसरे खंड में गुरु ने यह बताया कि ब्रह्म के स्वरूप को पूरी तरह कोई नहीं जानता— न मैं, न तुम। देवता भी उसके विषय में बहुत कम जानते हैं। इसीलिए मेरा कहना यह है कि उसके विषय में जितना तुम जानते हो, उस पर मनन-चिन्तन करो। समझने की बात यह भी है कि जो उस ब्रह्म को जानते हैं, वे भी यह मानते हैं कि वे ब्रह्म को नहीं जानते। ब्रह्मज्ञान का मिथ्याभिमान नहीं करना चाहिए; किन्तु ब्रह्म है, यह विश्वास अवश्य करना चाहिए। ज्ञान का अभिमान करने वाले उस ब्रह्म को नहीं जानते, किन्तु बार-बार के मनन-चिन्तन से वह परम सूक्ष्म, अदृश्य, अनन्त शक्तिमय ब्रह्म समझ में आ जाता है। साधक आत्मा से शक्ति को प्राप्त करता है और ब्रह्मविद्या (पराविद्या) से अमरता प्राप्त करता है—

प्रतिबोध विदितं मतममृतत्वं हि विन्दते।

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्॥

(केनो.-2/4)

मनुष्य जन्म की वास्तविक सफलता चिन्तन-मनन और साधना के द्वारा ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को जान लेने और अमरता को पा लेने में हैं। यदि इस दुर्लभ योनि में मनुष्य ऐसा नहीं कर पाता, तो इससे बड़ी और कोई हानि नहीं हो सकती—
इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेहिहावेदीन्महती विनष्टिः।

भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥

(केनो.-2/5)

संसार की और चाहे जितनी उपलब्धियाँ मनुष्य प्राप्त कर ले,

ईश्वर का सान्निध्य-लाभ किये बिना वे सब व्यर्थ हैं, अकारथ हैं। यदि मनुष्य जन्म में ईश्वर को न जाना, तो उपनिषद्कार के शब्दों में यह 'महती विनष्टि' है। सम्भवतः यहीं से प्रेरणा लेकर इसी बात को लोक भाषा में गोस्वामी तुलसीदास ने इन शब्दों में लिखा है-

राम नाम को अंक है, सब साधन हैं सून।

अंक गये कछु हाथ नहीं, अंक रहे दस गून॥

'केनोपनिषद्' के तीसरे खंड में आलंकारिक शैली में ब्रह्म की अपरिमित शक्ति और महिमा का वर्णन है। सृष्टि का रचयिता वह परम ब्रह्म सर्वशक्तिमान है। अन्य सारे देव उसी की शक्ति से महिमामण्डित और शक्तिशाली हुए किन्तु वे स्वयं को विजयी महिमान्वित और शक्तिशाली समझने लगे। देवों के अभिमान के जानकार उसे खण्डित करने के लिए ब्रह्म उनके बीच यक्ष रूप में प्रकट हुआ, किन्तु देवता नहीं जान पाये कि यह यक्ष कौन है। उसे जानने के लिए देवों ने सर्वप्रथम अग्नि को उसके पास भेजा। यक्ष ने अग्नि से पूछा कि तुम कौन हो और तुम्हारी शक्ति क्या है? अग्नि ने कहा कि मैं अग्नि हूँ और इस पृथ्वी पर जो कुछ है, उसे जलाने की शक्ति मुझ में है, किन्तु यक्ष के द्वारा दिये गये तिनके को अग्नि नहीं जला सका। वह देवों के पास लौट गया। तब देवों ने वायु को भेजा। यक्ष ने वायु से पूछा कि तुम कौन हो और तुम में क्या शक्ति? वायु ने उत्तर दिया-मैं वायु हूँ, मातरिश्वा हूँ और भूमि पर जो कुछ है, उसे उड़ा देने की शक्ति मुझ में है। तब यक्ष ने उसे भी एक तिनका दिया और उसे उड़ाने के लिए कहा, किन्तु पूरा जोर लगाने पर भी वायु उसे नहीं उड़ा सका तथा लज्जित होकर देवों के पास लौट आया। तब देवों ने यक्ष के विषय में जानकारी लेने के लिए इन्द्र को भेजा, किन्तु यक्ष उससे छिप गया-उसे दिखाई नहीं दिया। लौटते समय मार्ग में इन्द्र को सुवर्णभूषिता उमा मिली जिससे इन्द्र ने पूछा कि क्या तुम बता सकती हो कि यह

यक्ष कौन है?

इस आलंकारिक-प्रतीकात्मक दृष्टान्त में समझने की बात यह है कि अग्नि और वायु दो प्रबल तत्त्व हैं, किन्तु इनमें जो शक्ति है वह इनकी अपनी नहीं है, ईश्वर की दी हुई है। दूसरे यह कि इन देवों का संबंध आँख और कान से है, पर इन इन्द्रियों से ब्रह्म को नहीं जाना जा सकता। केवल इन दो इन्द्रियों से ही नहीं, पाँचों इन्द्रियों से भी परमात्मा का साक्षात्कार नहीं किया जा सकता। 'इन्द्र से तात्पर्य विद्युत् और मनोवृत्ति है, बिजली की चमक और मानस-कल्पना भगवान् के स्वरूप को प्रकट करने और जानने में असमर्थ है। यह रूपक अधिदैवत और अध्यात्म दोनों भावों को प्रकट करता है।.... यहाँ उमा से तात्पर्य अधिदैवत में जगमगाती सूर्य की ज्योति से है। अध्यात्म में शुद्ध बुद्धि समझी गई है।" (स्वामी सत्यानन्द, एकादशोपनिषत्संग्रह, षष्ठावृत्ति संवत्-2045, पृ. 15) आशय यह कि श्रद्धा, विश्वास और आस्तिक्य भाव से ब्रह्म की महिमा जानी जा सकती है तथा इन भावों का उदय शुद्ध-बुद्धि से ही सम्भव है। आस्तिक्य बुद्धि के सहारे ही ईश्वर की महिमा को देखा और समझा जा सकता है।

चौथे खंड का प्रारंभ उमा के इस कथन से होता है कि यह यक्ष ब्रह्म है, ईश्वर है, अतः परम पूज्य है। वह इन्द्र को बताती है कि इसी ब्रह्म की शक्ति से तुम और सभी देवगण विजयी और शक्तिशाली बने हो। इस प्रकार उमा से सबसे पहले इन्द्र ने यह जाना कि यह यक्ष ब्रह्म है और इसी की शक्ति से हम शक्तिशाली और महिमान्वित हैं। इन्द्र के पश्चात् अग्नि, वायु आदि देवों को भी इसका ज्ञान हुआ। उमा ने इन्द्र को बताया कि बिजली के चमकने और आँखों के झपकने के समान ब्रह्म का आदेश है। कहने का भाव यह है कि संसार की रचना उस ब्रह्म का सांकेतिक परिचय देती है, किन्तु तत्त्वों के ज्ञान से उस ब्रह्म का पूरा और सम्यक्

ज्ञान नहीं होता। ब्रह्म को ठीक-ठाक जानने के लिए अध्यात्म-पथ पर चलना आवश्यक है। और यह अध्यात्म है क्या? अध्यात्म है चंचल मन को ईश नम के स्मरण में एकाग्र कर देना। ब्रह्म को परम प्रिय जानकर प्रेम-पूर्वक मन को उसी की उपासना में लीन कर देना ही अध्यात्म है। तब शिष्य ने कहा-गुरुदेव! मुझे बताइए कि उपनिषद् क्या है? गुरुदेव ने कहा कि मैंने तुझे ब्राह्मी उपनिषद् कह दी है। आत्मा-परमात्मा, ब्रह्मसत्ता और ज्ञान का अन्तर तुझे समझा दिया है। परम प्रिय परमात्मा की उपासना, स्मरण और ध्यान से करनी चाहिए। उपनिषद् का यही अर्थ है- ध्यानस्थ होकर परमात्मा की उपासना, उसकी निकटता, आत्मज्ञान की प्राप्ति, ब्रह्मविद्या का रहस्य जानना और आत्मा-परमात्मा के भेद को पहचानना।

उस उपनिषद् की प्रतिष्ठा तप, दम और कर्म में है। वेद ही उसके सारे अंग हैं और उसका निवास-स्थान सत्य है- 'तस्मै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा, वेदाः सर्वाङ्गानि, सत्यमायतनम्॥'(केनो. -4/8) सहनशीलता के साथ सादा जीवन व्यतीत करना तप है। इन्द्रियों का संयम, मन को वश में रखना और भावशुद्धि दम है। और कर्म का अर्थ है नित्य-नैमित्तिक कर्तव्यों का पालन, सत्पथ का अनुधावन निर्लिप्त भाव से कर्मरत रहना, उनमें अनासक्ति, जिसे योगेश्वर कृष्ण ने गीता में निष्काम कर्म कहा है। ब्रह्मोपासक तप, दम और कर्म से उपासना का अधिकारी बनता है। ब्रह्म विद्या की सम्यक् जानकारी के लिए वेदों का ज्ञान और वेदाज्ञा का पालन आवश्यक है। ब्रह्मविद्या का निवास-स्थान सत्य है। ब्रह्म सत्य है, अतः ब्रह्मविद्या के साधक का सत्यनिष्ठ होना आवश्यक है। ब्रह्मोपासक पापों का परित्याग कर अन्ततः मोक्ष को प्राप्त कर लेता है- यही ब्रह्मोपासना का फल है।

बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

चलभाष-09718479970

भाई परमानन्द और वीर सावरकर

-आचार्य बालाराव सावरकर

गुरु गोविन्दसिंह और छत्रपति वीर शिवाजी, लाला लाजपतराय और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक- ये पंजाब और महाराष्ट्र के समकालीन और एक विचार के नेता स्वीकार किये जाते हैं। उसी प्रकार भाई परमानन्द और वीरसावरकर ये दोनों भी पंजाब और महाराष्ट्र के समकालीन एक विचार के महापुरुष हैं। ये छः के छः महापुरुष हिन्दूराष्ट्र के पुनरुत्थापक रहे हैं। गुरु गोविन्दसिंह और छत्रपति शिवाजी लगभग 300 वर्ष पूर्व हुए। उस समय भारत में इस्लामी राज्य बढ़ रहा था। अनेक हिन्दू इस्लामी सत्ता के दास हो गये थे। उसके लिये लड़ते थे और मरते थे। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति का विचार और उसके लिए युद्ध करने की मानसिक सिद्धता भी उन सहस्रावधि हिन्दुओं की नहीं थी। पं. जगन्नाथ संस्कृत में पद्य रचता था- "दिल्लीश्वरोवा जगदीश्वरोवा....." उस समय महाराष्ट्र के एक कोने में युवक शिवाजी ने प्रतिज्ञा ली थी कि मैं स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिये इस्लामी सत्ता को पराजित कर हिन्दुस्तान में गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक हिन्दू राज्य स्थापित करूँगा। गुरु गोविन्दसिंह जी भी उसी उद्देश्य के लिए लड़े थे।

90-95 वर्ष पूर्व लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय अंग्रेज-राज्य के विरुद्ध वाणी और लेखनी से स्वातन्त्र्य की प्रेरणा देते थे और अंग्रेज राज्य के विरुद्ध संघर्षरत थे। उसी काल में देवता-स्वरूप भाई परमानन्द और वीर सावरकर लेखनी, वाणी और शस्त्र लेकर अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध खड़े हुए थे। पूज्य भाईजी का जन्म 4 नवम्बर 1874 को और वीर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 में हुआ था और वीर सावरकर का जन्म मराठी चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। दोनों उच्चकोटि के विद्वान, लेखक, विचारक और वक्ता थे और दोनों ही शस्त्रबल में विश्वास रखते थे।

भारत में विदेशी अंग्रेज को राज्य नष्ट करना और स्वधर्म

और स्वराज्य की स्थापना करना इस उद्देश्य से भाईजी अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में अफ्रीका गये और वहाँ से लंदन गये। उसी समय सावरकर जी लंदन में थे। वे भारतीय युवकों को अपने क्रान्तिकारी विचारों की दीक्षा देते थे। सावरकर जी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित भारत भवन में रहते थे, लंदन में भाईजी भी भारत भवन में गये। सावरकर जी और भाईजी की विचारधारा बहुत मिलती-जुलती थी। उस समय अंग्रेज इतिहासकार जो इतिहास लिखते थे, वह पक्षपातपूर्ण होता था। अंग्रेज इतिहासकार भारत पर साम्राज्य स्थापित करने के लिए लड़ने वाले अंग्रेजों को वीर कहते थे और भारत को स्वतन्त्र करने वाले वीरों को गुण्डा कहकर गालियाँ देते थे। अंग्रेजों का कहना था कि 1857 का युद्ध राजद्रोह था। भाईजी और सावरकरजी कहते थे कि यह स्वातन्त्र्य समर था। उसमें लड़ने वाले भारतीय स्वातन्त्र्यवीर थे। वे पराभूत हुए, फाँसी चढ़ गये, वे हुतात्मा (शहीद) थे। उन स्वातन्त्र्य वीरों के यश और गौरव को प्रदर्शित करने वाला शोध प्रबन्ध भाईजी ने लिखकर लंदन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया लेकिन अंग्रेज प्राध्यापकों ने उस शोध प्रबन्ध को अमान्य कर दिया। उसी काल में सावरकर जी ने भी “1857 का भारतीय स्वातन्त्र्य समर” सुप्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। अंग्रेज शासकों के द्वारा उस इतिहास ग्रन्थ को राजहृत किया गया। किन्तु सावरकर और उनके साथियों ने हालैण्ड और फ्राँस के मुद्राणालयों से इस ग्रन्थ को प्रकाशित करा दिया और गुप्त रूप से विश्व भर में उसका प्रचार किया। इस कार्य में और उस समय बम की विद्या प्रसारित करने के कार्य में सावरकर और भाईजी साथ-साथ थे। वे केवल लेखक और वक्ता ही नहीं थे वरन् वे कर्मशील कार्यकर्ता और नेता भी थे। इस कारण दोनों को राजद्रोह के अपराध में आजन्म कारावास की सजा हुई और दोनों को कारावास की सजा भोगने के लिए अंडमान भेजा गया। भाषा के सम्बन्ध में भी दोनों के विचारों में साम्य था। लंदन

से 1907 में भारत आने पर भाईजी ने आर्यसमाज के उस समय के नेताओं से कहा कि आर्यसमाज द्वारा संचालित महाविद्यालयों में अंग्रेजी को प्रमुखता देना अनुचित है। अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारतीयों को सदा के लिये दास बनाये रखना था। हमारी भाषाएँ हिन्दी और संस्कृत अंग्रेजी से अधिक श्रेष्ठ और महान हैं। अपने महाविद्यालयों में अपनी भाषा को स्थान देना आवश्यक है। सावरकर जी भी यही कहते थे। यद्यपि उनकी भाषा मराठी थी तथापि वे संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के समर्थक थे। उनका कहना था कि अपनी भाषा में जो विदेशी फारसी, उर्दू, अंग्रेजी शब्द घुसे हुए हैं उनका बहिष्कार करना आवश्यक है। भाईजी आर्यसमाज के प्रचारक थे। इसी रूप में वे विदेशों में हिन्दू संस्कृति और वैदिक धर्म के प्रचार के लिये गये थे। आर्यसमाज जन्मजात जातिभेद, छूत-अछूत नहीं मानता। अतः भाईजी सभी हिन्दुओं को एक मानते थे। वे कहते थे कि मुसलमान इस देश को अपनी मातृभूमि नहीं मानते वरन् भोग भूमि मानते हैं, इसलिए उनका बहिष्कार करना चाहिए। इस विचारधारा के साथ भाई परमानन्दजी हिन्दूसभा के सदस्य और नेता हुए। वीर सावरकर जी भी इसी मत के थे। उन्होंने भी बन्दीगृह से बाहर आने पर रत्नागिरि में हिन्दूसभा की स्थापना की। 1925 में हिन्दू सभा का आठवाँ अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। उसके अध्यक्ष पद के लिए भाईजी और सावरकर जी दोनों के नाम प्रस्तावित हुए। उसी प्रकार 1933 में अजमेर में जो आ०भा० हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ उसके अध्यक्ष पद के लिए भी वीर सावरकर और भाईजी के नाम प्रस्तावित हुए थे। वीर सावरकर उस समय रत्नागिरी में नजरबन्द थे। भाई परमानन्द जी उस अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और उन्होंने वीर सावरकर जी को मुक्त करने वाला प्रस्ताव उस अधिवेशन में रखा था। चार वर्ष के पश्चात् 1937 के हिन्दू महासभा के अधिवेशन के लिए वीर सावरकर अध्यक्ष निर्वाचित हुए। लंदन और

अण्डमान के ये दोनों साथी कर्णावती (अहमदाबाद) के हिन्दू सभा अधिवेशन की विशाल शोभायात्रा में साथ-साथ बैठे थे। प्रतिनिधि और अपार जनसमूह घोषणा कर रहा था- “वीर सावरकर अमर रहे” और “भाई परमानन्द अमर रहे।

हिन्दू राष्ट्र के इन दोनों मन्त्रद्रष्टाओं ने हिन्दुओं को जागृत करने, संगठित करने और शक्तिशाली बनाने के लिए तन-मन-धन से प्रयास किए। हिन्दू समाज के पुनरुत्थान के लिए दोनों ही निरन्तर घूमते रहे, बोलते रहे, संघर्ष करते रहे। उनका जीवन व्यक्तिगत नहीं था, सार्वजनिक था। लोगों को धोखा देकर नेता बनना, उनका उद्देश्य नहीं था। हिन्दूसमाज उनके नेतृत्व को स्वीकार करे या न करें किन्तु समाज को सही मार्ग दिखाना वे अपना कर्त्तव्य मानते थे। वे जानते थे कि आज का हिन्दू समाज अपने हित चिन्तकों का समर्थन नहीं करता है। वह तो मधुर भाषा में मिथ्या आश्वासन देने वाले बगुला भक्तों पर विश्वास करता है और उनको ही समर्थन देता है।

इस हिन्दू मनोभावना का, परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान होते हुए भी उन्होंने नेता बनने के लिए हिन्दुओं को असत्य मार्ग नहीं दिखाया। वे कहते थे कि यदि हिन्दू समाज गाँधी प्रणीत काँग्रेस का समर्थन करेगा तो देश का विभाजन अटल है मुसलमानों के सामने घुटने टेकने से वे अपने होने वाले नहीं हैं। हिन्दू संगठन और शठे शाठ्य की नीति से ही वे सीधे मार्ग पर आयेंगे। दोनों का संदेश था कि शुद्धि को अपना कर ही धर्मान्तरित अहिन्दुओं की समस्या का समाधान होगा। दोनों ही कहते थे कि राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण करना चाहिए। चुनावों में ही हिन्दू हित का आश्वासन देने वालों को ही हिन्दुओं को अपना मत देना चाहिए। यदि 30 प्रतिशत हिन्दू भी यह निश्चय करेगा तो आज भी बचा हुआ हिन्दुस्थान जीवित रहेगा। इतना ही नहीं फिर से हिन्दुस्थान अखण्ड, समर्थ और समृद्ध होगा।

किसी गज से नापिए
बड़ा ही पाएँगे महामना को
(25 दिसम्बर, जिनकी जयंती है)

—पं. जवाहरलाल नेहरु

[पण्डित मदनमोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) के अहिय्यापुर में हुआ था। अब यह मोहल्ला मालवीय नगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। मालवीयजी को बचपन में कविता का बड़ा शौक था। उन्होंने 15, 16 वर्ष की आयु में ही कवि 'मकरन्द' नाम से ख्याति प्राप्त कर ली।

काँग्रेस के 1886 में कलकत्ता अधिवेशन में मालवीय जी प्रथम बार राजनैतिक मंच पर पधारे थे। इसके बाद जीवन पर्यन्त काँग्रेस से जुड़े रहे। 13 अप्रैल, 1919 को 'जलियाँवाला बाग नरसंहार' पर उन्होंने केन्द्रीय धारा सभा में लगातार छः घंटे तक ओजस्वी वाणी में ब्रिटिश क्रूरता के विरुद्ध आवाज उठाई। काँग्रेस द्वारा संचालित आन्दोलनों में उन्होंने जेल यात्रा की। कई बार काँग्रेस के निर्णयों का खुलकर विरोध किया, फिर भी काँग्रेस में वह सम्मानित एवं प्रतिष्ठित स्थान रखते थे। हिन्दुत्ववादी होने के कारण हिन्दु महासभा में भी उनका बड़ा सम्मान था। पं. मदनमोहन मालवीय जी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' है। उन्होंने इसकी स्थापना 4 फरवरी सन् 1916 को की थी। 1919 से 1946 तक वे इसके कुलपति रहे। मालवीय जी की पत्रकारिता जगत में गहरी पैठ थी। उन्होंने 1907 में 'अभ्युदय' नामक साप्ताहिक पत्र आरम्भ किया जिसे बाद में दैनिक कर दिया गया। 1910 में 'मर्यादा' मासिक पत्रिका आरम्भ की। किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु 1921 में 'किसान' पत्र निकाला। अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' की स्थापना भी मालवीय जी ने ही की थी। वह 1924 से जीवन पर्यन्त 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के निदेशक मंडल के प्रतिष्ठित सदस्य रहे। नौआखाली में हिन्दुओं के भयंकर रक्त-पात से उन्हें बड़ा मानसिक आघात लगा। इस आघात को वह सह न सके। 1946 में उन्होंने अंतिम श्वास ली।

महान स्वतंत्रता सेनानी महामना पं. मदन मोहन मालवीय अपनी ही धुन के धनी अद्भुत शख्सियत थे। क्रांतिकारिता की राह में चीजों को बिगाड़ने से ज्यादा वे बनाने पर जोर देते थे। उन्होंने लक्ष्य आधारित काम किया और अद्भुत सफलता भी पाई। उनकी बनाई संस्थाओं ने देश के लोगों की हिम्मत बढ़ाई और उनमें आत्मविश्वास पैदा किया। उनके जन्म-शताब्दी वर्ष पर पं. जवाहरलाल नेहरू ने बड़ी मार्मिक और भावभीनी श्रद्धांजलि दी थी।]

मालवीय जी का जन्म दिवस हमारे देश के लिए एक शुभ दिन है, विशेषकर प्रयाग नगर निवासियों के लिए आज एक गुजरा हुआ जमाना मेरी आँखों के सामने आता है, जब मैं थोड़ी-बहुत पढ़ाई करके इलाहाबाद वापस आया था। यों तो बहुत बचपन से, मालवीय जी को दूर से मैं देखता रहा हूँ, वैसे ही जैसे बच्चे देखते हैं बड़ों को। वे मुझसे प्रेम करते थे और मैं उनका आदर करता था। फिर एक जमाना गुजरा और मैं बाहर रहा। भारत वापस आया तो बहुत बातों में लग गया। राजनीतिक बातों में भी लगा। उस समय जवानी का जोर था, जोश था। मुझे याद है कि उन दिनों मैं यहाँ भारतीय भवन में अक्सर उनके पास जाता था। मेरे मन में शंकाएँ थीं, परेशानी थी कि क्यों कुछ नहीं होता, लोग ढीले क्यों पड़ जाते हैं? मैं उनसे पूछता था और वह मुझे समझाते थे। कुछ समझ में भी आया था, फिर भी दिमाग परेशान रहता था। हिन्दुस्तान की हालत कुछ ठीक नहीं मालूम होती थी। विशेषकर मुझे वे दिन याद हैं जब मैं शुरु-शुरु में उनके पास जाता था कभी अकेला, कभी किसी और के साथ। उनसे यहाँ का कुछ राजनीतिक हाल जानने की कोशिश करता था। फिर मैं स्वयं इन बातों में पड़ा और उनसे मिलने के अनेक अवसर मिले। फिर दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई का जमाना आया। हमारे यहाँ का राजनीतिक काम ठंडा हो गया, क्योंकि दुनिया की लड़ाई चल रही थी। कुछ ध्यान उधर जाता था कि दुनिया का अब क्या होगा। इस लड़ाई के दौरान कुछ नई-नई बातें हुई और फिर से हल्के-हल्के हिन्दुस्तान उठा और

हवा बदलने लगी। शायद बाज लोगों को याद हो वह जमाना, जब लोकमान्य तिलक ने एक होमरूल लीग शुरू की थी और एक श्रीमती एनी बेसेंट ने। हमारी संस्था काँग्रेस भी, जिसके सबसे पुराने और बड़े नेता मालवीय जी थे, कुछ जागने लगी थी। लड़ाई खत्म हुई और दूसरी बातें सामने आईं। थोड़े ही दिनों बाद पंजाब का हत्याकांड हुआ। मार्श-लॉ बगैरा का जमाना और उसमें मालवीय जी का एक बहुत बड़ा हिस्सा रहा यानी उसकी तहकीकात में, जाँच-पड़ताल में और उनकी सहायता करने में। उस समय उनके साथ मुझे बहुत काम करने का मौका मिला। लाहौर में, पंजाब में, अमृतसर में कुछ शिमला में भी, जहाँ उस समय पुरानी इंपीरियल कौंसिल की मीटिंग होती थी। मालवीय जी को तो बहुत दिनों से जानता था। यहाँ पास से बहुत कुछ जानने का मौका मिला। उन्होंने हमेशा बहुत प्रेम से मुझे बातें बतलाईं। समझाईं। कभी-कभी मैंने उनसे बहस करने की भी जुर्रत की। उसको भी उन्होंने प्रेम से समझाने की कोशिश की। उसका एक जबरदस्त असर होता था, चाहे कोई उनकी किसी बात से सहमत हो या न हो। उसके बाद असहयोग आंदोलन शुरू हुआ और गाँधी जी मैदान में आए। लेकिन इस सारे जमाने में भी मालवीय जी का असर महज इलाहाबाद पर ही नहीं, सारे भारत की राजनीति पर बहुत जबरदस्त रहा।

कभी-कभी हम, उस समय के नौजवान, बावजूद उनके प्रति अपनी मुहब्बत के, उनसे कुछ शिकायत करते थे। हमारी राय में उस वक्त वह धीमे चलते थे। यह तो हमारी, क्या कहें, अपनी जवानी का एक जोश था कि हम समझते थे कि जो हमारी बात को पूरी तरह से मंजूर न करें, वह धीमा है। खैर, काँग्रेस जब से शुरू हुई, वह हमारी राजनीतिक आन्दोलन की खास निशानी रहे हैं। उसे शुरू करने में, बनाने और बढ़ाने में मालवीय जी का एक बहुत बड़ा हिस्सा रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि समय की हवा देखकर भारतीय राजनीति में मालवीय जी अगुआ भी रहे और एक कड़ी भी रहे जोड़ने की उन लोगों को, जो काँग्रेस में आगे-पीछे गिने जाते थे,

यानी गरम नरम दल दोनों को। उनका स्वभाव ही बहुत विरोध करने का नहीं था। यह तो एक बहुत ऊँचे दर्जे की बात है कि वह अपनी राय पक्की रखते हुए भी मिलकर रहते थे और दूसरों को मिलाने की कोशिश करते थे। फिर वह जमाना आया जब उनसे अक्सर ही मेरा मिलना-जुलना होता रहा। इस तरह की सब तस्वीरें आज हमारे सामने आती हैं और मैं देखता हूँ कि इन सब वर्षों में उनका कितना बड़ा हाथ रहा अपनी राजनीति को ढालने में। यह तो हुई हमारी राजनीति की बात, जो अपने में खुद ही बड़ी बात है। दूसरी बड़ी बात थी उनका हमारी पुरानी संस्कृति के प्रति खास झुकाव बढ़ाने का। वह हर वक्त कोशिश करते थे और निशानियाँ तो आपको हर जगह मिलेंगी। उस समय हालत कुछ ऐसी थी। वह जो बातें कहते थे, वे मेरी राय में बहुत सही थीं। लेकिन, उन पर बहसें हुईं और वे बहसों अब तक जारी हैं, कभी भाषा के मामले में, कभी कुछ और मामलों में। लेकिन मालवीय जी किसी भाषा के विरोधी नहीं थे। वह चाहते थे कि हिन्दी और संस्कृत की यहाँ भारत में तरक्की और यह एक बहुत ठीक बात थी। वह जो बात करने की कोशिश करते थे, बिना किसी का विरोध किए हुए। विरोध करने का सवाल ही नहीं है। विद्या और इल्म का विरोध नहीं होता, बल्कि वह तो एक धन-दौलत है जो हमको ऊँचा करती है और जितनी ही वह अधिक हो, उतना ही अच्छा। उस समय के हमारे जो राजनीतिक नेता थे वे तरह-तरह के थे। यह जमाना ऐसा था कि हमारे देश में काफी बड़े आदमी हुए। उनमें से अधिकतर काँग्रेस की ओर खिंचे कुछ बाहर भी रहे। हर तरफ के लोग थे और वे एक से नहीं थे। अलग-अलग उनकी बातें थीं, अलग-अलग मजमून थे। लेकिन उस समय के उन बड़े नेताओं में प्राचीन संस्कृति की ओर सबसे अधिक ध्यान मालवीय जी का रहा। यह एक अच्छी बात थी। यों भी अच्छी होती, लेकिन उस समय की स्थिति-विशेष में तो वह बहुत ही अच्छी थी, क्योंकि देश कुछ भटक रहा था। पहली बात तो यह कि हमारे लोगों में,

बड़े-छोटे सभी में, अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों की एक नई जाति-सी कायम हो रही थी। हालाँकि राजनीतिक जीवन में हम अंग्रेजी हुकूमत का मुकाबला करते थे, वह रोज-ब-रोज सख्त होता जाता था। लेकिन अंग्रेजी, संस्कृति क्या अंग्रेजियत का, उस जमाने के हमारे नेताओं पर ज्यादा असर था। यह आश्चर्य की बात नहीं है। ऐसा तो होना ही था और देशों में भी ऐसा ही हुआ। खास अंग्रेजी ही नहीं, सारे यूरोप में एक नया ढंग निकला था और उसके पीछे था नया जमाना इंडस्ट्रीज का, कारखाने का, विज्ञान का। उसे अपनाने की हम कोशिश करते थे। लेकिन इसके अलावा भी ऊपरी चीजें हैं। थोड़े बड़े आदमी बड़ी बातों को देखते थे। और अन्य लोग तो छोटी बातों को ही देखते थे मैं अंग्रेजियत की बात कर रहा हूँ। तो मालवीय जी ने कोई विरोध इन बातों का भी नहीं किया था; हाँ, अपना सारा वजन उन्होंने हिन्दुस्तानियत पर, भारतीयता पर डाला। उस समय भी बहुत सारे लोग थे, बड़े विद्वान् लोग थे, संस्कृति के बड़े पंडित लोग भी थे, पर जहाँ तक मेरा विचार है, राजनीतिक नेताओं में, बड़े, नेताओं में थे मालवीय। वे बहुत बड़े आदमी थे जिन्होंने हिन्दुस्तान को ऐसे मौके से निकाला, वे बहुत बड़े थे लियाकत में, विचारों में, अपने बलिदान की शक्ति में। आजकल के नौजवान बहुत-कुछ सीख सकते हैं मालवीय जी के जीवन से। उनके सामने जो लक्ष्य था, जैसे उन्होंने काम किया और सफलता पाई। हम मूर्तियाँ खड़ी करें, संस्थाएँ बनाएँ, यह तो ठीक हैं, लेकिन आखिर में सबक सीखें उनकी जिंदगी से और सीखकर उसी रास्ते पर चलें, आज के जमाने में यही उनका सबसे बड़ा स्मारक हो सकता है। यह अच्छा है कि समय आया उनकी शताब्दी मनाने का। तो पुराने और नए लोग सब फिर सोचें, विचार करें और सीखें कि वे क्या-क्या बाते थीं, जिनसे मालवीय जी इतने ऊँचे महापुरुष हुए, कैसे उन्होंने भारत की आजादी के रास्ते में, अपनी संस्कृति का आदर करने के रास्ते में सबको बढ़ाया। और नई पीढ़ी को यह संदेश दें कि उनके बतलाए रास्ते पर चलकर भारत की सेवा हम किस तरह करें और आगे बढ़ें।

स्वामी श्रद्धानंद की शहादत और महात्मा गाँधी

-नरेन्द्र शर्मा

23 दिसंबर, 1926 को अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी युवक ने धोखे से गोली चलाकर स्वामी जी की हत्या कर दी, यह युवक स्वामी जी से मिलकर इस्लाम पर चर्चा करने के लिए एक आगंतुक के रूप में नया बाजार, दिल्ली स्थित उनके निवास पर गया था, वह स्वामी जी के शुद्ध कार्यक्रम से पागलपन के स्तर तक रुष्ट था, इस घटना से सभी दुखी थे क्योंकि स्वामी दयानन्द सरस्वती के दिखाये मार्ग पर चलने वाले इस आर्य संन्यासी ने देश एवं समाज को उसकी मूल की ओर मोड़ने का प्रयास किया था। गाँधी जी ने जिन्हें स्वामी श्रद्धानंद ने 'महात्मा' जैसे आदरयुक्त शब्द से संबोधित किया और जो उनके नाम के साथ नियमित रूप से जुड़ गया, उनकी हत्या के दो दिन बाद अर्थात् 25 दिसम्बर, 1926 को गोहाटी में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में जारी शोक प्रस्ताव में जो कुछ कहा वह स्तब्ध करने वाला था। इस अधिवेशन में अस्वस्थ होने के कारण न पहुँचने के कारण अपने तार संदेश में कहा था कि इस समय देश में सर्वाधिक आवश्यकता हिन्दू-मुस्लिम एकता की है।

महात्मा गाँधी के शोक प्रस्ताव के उद्धरण इस प्रकार है "मैंने अब्दुल रशीद को भाई कहा और मैं इसे दोहराता हूँ, यहाँ तक कि मैं उसे स्वामी जी की हत्या का दोषी भी नहीं मानता। वास्तव में दोषी वे लोग हैं जिन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध घृणा की भावना पैदा की, इसलिए यह अवसर दुख प्रकट करने या आँसू बहाने का नहीं है। "यहाँ यह बताना आवश्यक है कि स्वामी श्रद्धानंद ने स्वेच्छया एवं सहमति के पश्चात् पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मलखान राजपूतों को शुद्ध कार्यक्रम के माध्यम में हिन्दू धर्म में वापसी कराई। शासन की तरफ से कोई रोक नहीं लगाई गई थी जबकि यह ब्रिटिश काल था। यहाँ यह विचारणीय है कि महात्मा गाँधी ने इस हत्या को सही ठहराया। जबकि दूसरी ओर वे अहिंसा का पाठ पढ़ाते रहे, हत्या का कारण कुछ भी हो, हत्या हत्या होती है, अच्छी या बुरी नहीं, अब्दुल रशीद को भाई मानते हुए उसे निर्दोष कहा। इतना ही नहीं गाँधी ने अपने भाषण में कहा...." मैं इसलिए स्वामी जी की मृत्यु पर शोक नहीं मना सकता.....हमें एक आदमी के अपराध के कारण पूरे समुदाय को अपराधी नहीं मानना चाहिए, मैं अब्दुल रशीद की ओर से वकालत करने की इच्छा रखता हूँ।" उन्होंने आगे कहा कि "समाज सुधारक को तो ऐसी कीमत चुकानी ही

पड़ती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या में कुछ भी अनुपयुक्त नहीं है, “अब्दुल रशीद के धार्मिक उन्माद को दोषी न मानते हुए गाँधी ने कहा कि “यह हम पढ़े, अध-पढ़े लोग हैं जिन्होंने अब्दुल रशीद को उन्मादी बनाया। स्वामीजी की हत्या के पश्चात् हमें आशा है कि उनका खून हमारे दोष को धो सकेगा, हृदय को निर्मल करेगा और मानव परिवार के इन दो शक्तिशाली विभाजनों को मजबूत कर सकेगा” (यंग ईण्डिया, दिसम्बर 30, 1926)।

संभवतः इन्हीं दो परिवारों (हिन्दू एवं मुस्लिम) को मजबूत करने के लिए गाँधी जी के आदर्श विचार को मानते हुए उनके पुत्र हरीलाल और पोते कौंति ने हिन्दूधर्म को त्याग कर इस्लाम स्वीकार कर लिया।

महात्माजी का कोई प्रवचन इन दोनों को धर्मपरिवर्तन करने से रोकने में सफल नहीं हो पाया। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही शुद्धि कार्यक्रम आयोजित कर देहरादून के एक युवक को वैदिकधर्म में प्रवेश कराया, बाद में स्वामी श्रद्धानन्द ने इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। गाँधी के सेक्युलरिज्म के हिसाब से यह कार्यक्रम मुस्लिम विरोधी था इसलिए वे स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या को न्यायोचित ठहराने लगे। सत्य और न्याय दोनों शब्द पर्यायवाची हैं, जहाँ सत्य है, वहीं न्याय है और जहाँ न्याय है, वहीं सत्य है, फिर गाँधी की हत्या को न्यायोचित ठहराना और हत्यारे को निर्दोष मानना उनके सत्य एवं न्याय के सिद्धान्त के दावे को खोखला साबित करता है।

अहिंसा के पुजारी यदि सेक्युलरिज्म के नाम पर हिंसा को न्यायोचित ठहराएँ तो उनके प्रवचन का क्या अर्थ? गाँधी के लिए अपने विचार सही हो सकते हैं लेकिन यह जरूरी तो नहीं कि सभी के लिए हों, नाथूराम के अपने विचार थे। देश के धर्म के आधार पर विभाजन की पीड़ा असहनीय थी। मुसलमानों के प्रति विशेष झुकाव के कारण हिन्दू समर्थक गोडसे की गाँधी से मतभिन्नता थी जिसके परिणामस्वरूप गाँधी जी की हत्या हुई। इस हत्या को भी किसी तरह से न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता, लेकिन यदि हम गाँधी जी के चश्मे से देखें तो नाथूराम को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता, अपने विचार से गोडसे ने भी हिन्दू समुदाय एवं राष्ट्रहित में यह कार्य किया था। उसके समर्थक उसकी मूर्ति स्थापित करना चाहते हैं तो क्या समस्या है?

यदि स्वामी श्रद्धानन्द का हत्यारा निर्दोष है तो गाँधी का हत्यारा भी निर्दोष है। यह तो नहीं हो सकता कि स्वामी जी की हत्या सेक्युलर थी और गाँधी की कम्यूनल।

सरदार पटेल और अम्बेडकर संवाद

संविधान निर्माण चल रहा था। इसमें सरदार पटेल भी संविधान निर्माताओं की लिस्ट में शामिल थे। अम्बेडकर ने आरक्षण की भीख का तुरा छोड़ दिया।

सरदार पटेल - “आरक्षण गलत है, इसको हटाओ”

अम्बेडकर - “नहीं, ये मेरी कौम के लोगों के लिए है।”

सरदार - ‘कौन सी तुम्हारी कौम? हम सब भारतीय हैं, आज़ादी के बाद आज देश का हर वर्ग भूखा नंगा है। इसलिए किसी वर्ग विशेष को ये सुविधा देना गलत है....।”

अम्बेडकर (चीखते हुए) --“मैं आरक्षण देना चाहता हूँ, अगर मुझे रोका गया तो मैं कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दूँगा।”

सरदार पटेल- “देखो भीमराव, तुम वो नहीं देख पा रहे जो मैं देख पा रहा हूँ। स्वार्थ की राजनीति ने तुम्हारी आँखों में पट्टी बाँध दी है। अगर आज किसी जाति विशेष को आरक्षण दिया गया तो भविष्य के भारत में रोज एक नई जात आरक्षण माँगेगी और देश की अखंडता पर खतरा उत्पन्न होगा... जो दलित और गरीब है उनके लिए हम दूसरे हर तरह के उपाय करने को तैयार हैं। जैसे मुफ्त शिक्षा, मुफ्त स्कूल, उनके लिए सस्ते घर, रोजगार इत्यादि।

हम उन्हें इतना काबिल बनायें ताकि वे खुद के दम पर आगे बढ़ सकें। न कि आरक्षण की बैसाखी से या मुफ्तखोरी से। तुम किसी अयोग्य को सत्ता पर बैठाकर देश को बर्बाद क्यों करना चाहते हो?”

अम्बेडकर (चीखते हुए) - “आरक्षण होकर रहेगा...!”

ये सुनकर लौह पुरुष सरदार पटेल, जो कभी किसी के आगे नहीं झुकते थे मजबूरी में उन्हें अम्बेडकर के कमरे से बाहर आना पड़ा और नेहरू से उन्होंने कहा था कि “ये आपने किस बीमार मानसिकता वाले व्यक्ति को ड्राफ्टिंग कमिटी का अध्यक्ष बना दिया, ये तो मानसिक उन्मादी प्रतीत होता है।

इसमें दूरदर्शिता की भारी कमी और अंग्रेज़ियत मानसिकता की गन्दगी भरी है।

अगर मैं भारत का प्रधानमंत्री होता तो इसे कब का इसके पद से हटा चुका होता। ये व्यक्ति भारत का दुर्भाग्य साबित होगा। तन से ज्यादा इसका मन काला है। हम हर गरीब दलित के हक की बात करने को तैयार हैं लेकिन इसका अर्थ ये तो नहीं कि भूखे मर रहे सवणों की कुरबानी दे दी जाये?"

ये सुनकर नेहरू मौन थे....उनके पास कोई जवाब न था.... सरदार पटेल ने अंतिम साँस ली और अखंड भारत के जनक सरदार की मृत्यु हो गयी। जानकार कहते हैं कि अगर सरदार ज़िंदा होते तो भारत का वह संविधान जो अम्बेडकर ने पेश किया था, वह लागू न हो पाता क्योंकि वह संविधान देश को बर्बाद करने वाला एक कीटाणु है।

आज की परिस्थितियों को देखें तो यह बात बिल्कुल सही साबित होती दिख रही है। कम योग्यता वाले व्यक्ति समाज के उच्च पदों पर बैठे हैं। आरक्षण की वजह से जो चपरासी योग्यता वाले हैं डॉक्टर, जज, इंजीनियर जैसे जिम्मेदार पदों पर बैठे हैं जिससे देश को कोई लाभ नहीं हो रहा।

अगर इसे तत्काल नहीं रोका गया तो देश को इतना नुकसान होगा कि उसको कभी भी सुधारा नहीं जा सकता।

इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप कड़े निर्णय ले सकते हैं तो इस विषय में कुछ निर्णय करें। आप के अलावा भविष्य में कोई भी इस विषय में सोचेगा यह मुमकिन नहीं है।

देश को लगी इस बीमारी का आप इलाज करेंगे तो आप मातृभूमि की प्रगति के लिए एक उचित कदम उठाएँगे।

पटेल की भविष्यवाणी आज पूर्णतया सत्य साबित हो रही है।

आज आरक्षण की माँग सब तरफ से उठ रही है। यहाँ तक कि गैर-सरकारी कार्यालयों में भी आरक्षण के लिए आंदोलन हो रहा है। इसे रोकना होगा। नहीं तो बहुत देर हो जाएगी।

हिन्दू जाति की चिकित्सा आवश्यक

—भाई परमानन्द

प्रस्तुत लेख भाई परमानन्द द्वारा चालीस के दशक में लिखा गया था। भाई जी ने हिन्दू समाज में व्याप्त राष्ट्रहित एवं स्वधर्महित के प्रति उदासीनता को एक रोग के रूप में चित्रित किया है। उन्हें इस बात की पीड़ा थी कि हिन्दू समाज बाह्य प्रतीकों के प्रति जितना सजग है उतना आन्तरिक सबलता प्राप्त करने के लिए नहीं है। यह वर्तमान में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था।

कई मनुष्यों को इस बात का निश्चय नहीं हो पाता कि व्यक्ति की भाँति जाति को भी रोग लग सकते हैं और उन रोगों की चिकित्सा करनी पड़ती है। मनुष्य के रोगों को पहचानना कठिन नहीं होता। वह स्वयं अपने रोग को प्रकट करने की चेष्टा करता है, परन्तु रोग के कठिन और गहरे हो जाने पर बड़े-बड़े वैद्य और डॉक्टर भी उलझन में पड़ जाते हैं। जाति के रोग का निदान इससे भी कठिन है। जाति स्वयं अपनी पीड़ा को प्रकट नहीं कर सकती। जब कभी उसका रोग प्रकट भी होता है तो भी न उसे रोगी माना जाता है और न उसकी चिकित्सा की जाती है।

मुझसे प्रश्न किया जाता है कि बताओ हिन्दू जाति के शरीर में रोग कहाँ है? हमें कोई रोग नहीं दिखता। मैं कहता हूँ हम सब पराधीन हैं। क्या पराधीनता रोग नहीं है? जाति भूखी और निर्धन है। क्या यह रोग नहीं है? इस देश में प्रतिवर्ष लाखों मनुष्य अकाल मृत्यु से मरते हैं। क्या यह भयंकर रोग नहीं है? जब कोई हिन्दू अपनी तुलना दूसरी जातियों से करता है तो स्पष्ट स्वीकार कर लेता है कि हिन्दू जाति में जीवन का अभाव है। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि हिन्दू जाति रोगग्रस्त है? हम सब मानते हैं कि हिन्दू जाति रोगग्रस्त

है किन्तु रोग को पहचानने वाला कोई चिकित्सक रोग का उपचार लिख देता है, तो न तो हम औषधि का सेवन करते हैं और न उसके परामर्श पर चलते हैं। हो तो क्या? अपनी व्याधि जानकर और औषधि जानकर भी हम इतने विवश हैं कि कुछ नहीं कर पाते। गत कुछ वर्षों की घटनाएँ देखकर मैंने जाति के कष्ट का अनुभव किया है और उसकी यह पुकार सुनाई पड़ी है कि जाति को संगठन की आवश्यकता है। संगठन किसी व्यक्ति विशेष का काम नहीं है। रुग्ण हिन्दू जाति की आत्मा ने स्वयं अपने लिए संगठन की औषधि सोची है। प्रत्येक हिन्दू यह कहता दिखाई देता है कि संगठन के बिना हम बच नहीं सकते। परन्तु उनसे पूछिए कि तुमने संगठन के लिए क्या किया है? क्या तुम संगठन के सदस्य हो? क्या तुमने अपने भाइयों को संगठन के कार्य के लिए अपना कुछ समय अर्पण किया है? तो या तो वह चुप हो जाएगा या टालने के लिए कहेगा क्या करें, कोई कुछ करता ही नहीं। परन्तु उससे आपका उत्तरदायित्व समाप्त नहीं हो जाता। आप इतना ही कीजिए कि सप्ताह में कम से कम एक दिन मिल बैठकर विचार कीजिये। कानों में शब्द जाता है किन्तु हृदय पथर हो चुका है। वह अनुभव ही नहीं करता। सोते हुए को जगाया जा सकता है परन्तु जागे हुए को कौन जगा सकता है? क्या आप अपने रोग का इससे भी बड़ा प्रमाण चाहते हैं? मैं न आर्यसमाज के विरुद्ध हूँ और न काँग्रेस के। जो, कुछ कहता हूँ वह इस उद्देश्य से कहता हूँ कि जो कोई गलती पर हो वह यदि अपनी गलती समझ जाये तो उसे ठीक कर ले। मुझे इन दोनों संस्थाओं के कार्य करने के ढंग पर आपत्ति है। इन दोनों में दिखावा बहुत अधिक आ गया है। रुग्ण जाति अपनी अपनी निर्बलता को दिखावे से छिपाना चाहती है और बलवान होने का ढोंग कर रही है। यह बड़ी

आपत्तिजनक अवस्था है। ईश्वर का भरोसा छोड़कर हम उसकी पूजा का ढोंग कर रहे हैं। रोगी जाति में पवित्रता और धर्म नहीं हो सकता। हम पवित्रता और धर्म का आडम्बर कर रहे हैं, और बाह्य चिह्नों पर मर मिटने को तैयार हैं। हम दिखावे में फँसकर निरोग होने की चिन्ता भी नहीं करते, यही बड़े दुःख का विषय है। दिखावे से थोड़ा-बहुत लाभ भी होता है, जब कोई संस्था खूब काम करती है और जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए थोड़ा-दिखावा भी करती है तो वह लाभदायक भी होता है, परन्तु वास्तविक काम का स्थान ले लेता है और जलसे करना ही उद्देश्य बन जाता है। यद्यपि ऐसी जाति उन्नति करती प्रतीत होती है परन्तु वास्तव में वह अवनति के गड्ढे में गिर रही होती है। दिखावा करना गिरी हुई जातियों का लक्षण है और उसी पर उनके जीवन का भरोसा होता है। वे समझती हैं कि दिखावा जोश उत्पन्न करने का एक तरीका है। परन्तु होता यह है कि वास्तविकता समाप्त होकर केवल दिखावा ही दिखावा रह जाता है। हमारे रोग की चिकित्सा का एक ही उपाय है और वह है त्याग-बलिदान का भाव। जिस समय रूस और जापान में युद्ध हो रहा था जापानी सेना ने एक रूसी किले पर आक्रमण किया। किले तक पहुँचने के लिए किले की खाई को भरना आवश्यक था। जापानी सैनिकों ने अपने साथियों के मृतक शरीर खाई में डाल दिये परन्तु ऐसा करने पर भी वह खाई भर न सकी। उस पर उन घायल सिपाहियों को ऊपर लाकर डाल दिया। जब इससे भी काम न बना तो सैकड़ों मनचले जापानी युवक सैनिक आगे बढ़कर खाई में कूद पड़े।



SALUTE TO THE SPIRIT OF R-DAY

-Kavita Nayar

Republic Day is the day to salute the spirit and contribution of all the great minds who gave birth to India's Constitution.

January 26, 1950, the day when the Constitution in India came in force, is celebrated as the Republic Day of India (R-Day). History states, 20 years prior to 1950. On January 26, 1930, the Indian National Congress had declared Poorna Swaraj (Independence of India). hence January 26, 1950 was selected to mark both, the declaration of Independence as well as the R-Day of India.

Significance of the day : R-Day is when families sit together to watch the grand parade held in Delhi, every year. Actress Nimrat Kaur, who shot to fame with her commendable role in the highly-acclaimed film Lunchbox, is an army kid and has fond memories of Republic Day. "As a child, I have fond memories of the day. Being a daughter of an army man. I used to religiously watch the Republic Day parade. Birla Balika Vidya Peeth, from where my mother passed out, still continues to participate in the parade." She says, Kaur further adds. "Being an army kid, I feel we are closer to the whole idea of patriotism; we grew up with it actually. I lost my father in Kashmir in 1994, on January 23 1994 and on January 26, 1994, his name was declared for Shaurya Chakra. I had mixed feelings: coming to terms with this huge loss, but also being proud of the fact that he was honoured for the love of his country."

Retired Philosophy professor P. Seshadri, feels that Republic Day defined the sovereignty of our country. "Dr. Babasaheb Ambedkar, a great thinking mind has given us our constitution. The belief of a class-free society with no discrimination on the basis of caste, gender, etc. is an ideal situation for a country. Everyone has the right to equal justice." He believes that we, as citizens, need to exercise our right to vote more judiciously. Seshadri adds, "Republic Day should mean much more than a national holiday. We must understand that we need to protect our country from external aggression, cultural

invasion and religious bigotry. If people of this country come together, then definitely there is no looking back and India will shine, bright always!"

Pro-development : Kaur feels that India is at a very interesting stage given the current political scenario. "I personally feel it is a very interesting time for the country. Also, there must be more focus on education and safety of women. Having said that, I also feel, once the welfare of the common man is completely taken care of, there is no looking back for India. "Sana Kazi, a college student from Mumbai says, "With respect to patriotism, I feel the least I can do is to vote in the upcoming elections, as there seems to be three major fronts : the third front seems to be emerging. The 2019 elections are going to be very important for the youth".

Quality Education : Quality education leads to the production of able leaders, aware citizens and that eventually results in building a nation. Echoing this, Seshadri explains, "Quality education must be made available, free of cost. Other than that, community service, if inculcated from childhood can also help in taking the country forward. National Cadet Core (NCC) and National Service Scheme (NSS) activities should be made a compulsory part of the curriculum. By doing so, we end up creating social assets to our country and not mere economic products."

For a better tomorrow : Author, historian and hotelier, Aman Nath, on the other hand, feels that time has come for us to do something for our country as Indians. "Republic Day is of great significance as it celebrates the democracy of India. We will be a good democratic country once we fight against corruption and move away from discrimination based on caste, creed and religion. It is only then that India will be truly democratic when we build the nation on democracy. The forthcoming elections will decide India's future, given the current political upheaval."

ATAL'S CONTRIBUTION TO POLITICS AND PARLIAMENT

On the day he was awarded Bharat Ratna, several BJP leaders showered laurels on Atal Bihari Vajpayee-the first BJP leader to become a Prime Minister: Calling Vajpayee a wordsmith who could play with words and remain measured, finance minister Arun Jaitley said he never fell into the temptation of committing an impropriety and realished virtues of social harmony. "His ability to rise above the party for a larger national cause was significant," Jaitley wrote in an article on the eve of Vajpayee's 90th birthday.

Addressing him as a product of democratic system and trained in parliamentary value, Jaitley said Vajpayee realised the virtues of both consensus and harmony." "His conduct of the Cabinet meetings was never tense. If any of us raised any point, or even contradicted a point, he encouraged discussion. The last word, of course, belonged to him," he said.

The FM argued that his 'bus initiative' with Pakistan was undertaken at a great political risk, since his own constituency had to be convinced of this.

BJP veteran L K Advani, Vajpayee's comrade-in-arms for several decades, also welcomed the decision but regretted that the Manmohan Singh Government ignored his 2008 request to give Vajpayee the award. "If I was to think of all persons who had been Prime Minister and draw up a balance sheet of their achievements and shortcomings, I would think Vajpayee was the only one with a term without blemish and shortcomings," Advani said.

Assam Chief Minister Tarun Gogoi, JD(U) chief Sharad Yadav former Bihar CM Nitish Kumar Trinamool Congress' Derek O'Brien were prominent non-BJP leaders who hailed the decision.

The Congress congratulate Vajpayee but at the same time also raked up his "rajdharm remarks made after the Godhra riots in Gujarat. AICC communication department chairman Ajay Maken said that they expect that the NDA government would follow the path of 'rajdharm and secularism shown by the Democracy.



ओ३म् Your child's future with indian culture.... Shivalik Vedic Anglo Residential

GURUKUL

— C.B.S.E. Pattern Only for Boys —



Admission Open
from Class V to IX



“शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा”
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन होगा।

आदरणीय बन्धु!

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संलय का काल है। बिना यथार्थ ज्ञान के किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति केवल कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट करते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो जाता था। कुछ शिक्षितताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थान पर सम्पूर्ण विकास करने का विचार यदि अपने मन में रखते हैं तो वह मात्र गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही हो सकती है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक गुप ऑफ़ इंस्टीट्यूट ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुनियोजित कर छात्रों को सर्वोन्नति के लिए शिवालिक वैदिक एंग्लो आवासीय गुरुकुल (Shivalik Vedic Anglo Residential Gurukul) “S.V.A.R.G.” का संचालन प्रारम्भ किया है। जिसमें : (क). शिक्षा (आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ-साथ वैदिक धर्म के आलोक में नैतिक शिक्षा द्वारा जीवन-निर्माण।) (ख). सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक) (ग) संस्कार (शरीर व आत्मा को श्रेष्ठ गुण, कर्म एवं स्वभाव से सुसोपित करना।) (घ). सेवा (गुरुकुल में प्राप्त उत्तम गुणों के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति के लिए अपना सार्विक योगदान सेवा के रूप में करना।)

माता-पिता परिवार में जिस प्रकार अपने शिशु का लालन-पालन एवं पोषण करते हैं वैसे ही लालित्वपूर्ण वातावरण में आपके बालक के जीवन का निर्माण विद्यालय में अपने विषय के श्रेष्ठतम आचार्यों एवं छात्रावास (आश्रम) में मातृ एवं पितृभाव के साथ संरक्षकों द्वारा किया जायेगा। वर्तमान व्यस्ततम जीवन में माता-पिता एवं अभिभावकों के पास समय की अनुपलब्धता होने से परिवारों में बालकों के सम्पूर्ण शैक्षिक एवं चारित्रिक जीवन निर्माण कहीं पीछे रह गया है। हम आपके उन स्वप्नों को साकार करने में आपका सहयोग करने के लिए आपके साथ कदम से कदम मिलकर कार्य करने के लिए उत्सुक हैं। वह सुनहरा अवसर आपके लिए नवप्रभात लेकर आया है। इसका लाभ उठाएं।



Features

- Digital Smart Classes • Sms Alert Service
- Lush Green Playground • Eco Friendly Environment
- Activity Cum Learning Room • Experienced & Dedicated Staff
- Special Focus on Moral Values • Special Focus on interaction in English
- Horse Riding & Gun Shooting • Digital & Well equipped Library
- Hi-Tech Computer Labs • Music Room
- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Pure Vegetarian & Authentic Mess with Spotless utensils

Co-curricular Activities

- Debate • Quiz • Art & Craft
- Painting • Educational Trips
- Meditation, Yoga & Hawan
- Festival Celebrations • Language Lab Activities
- Book Reading Sessions • House Competitions
- Creative Writing • Music & Dance
- Collage Making • MUN Clubs



Vill Aliyaspur, P.O. Sarawan -133206, Dosarka-Sadhaura Road, Ambala (Haryana),
E-mail: shivalikgurukul.ambala@gmail.com, Website : www.shivalikgurukul.com
Admission Helpline : 8901054781, 9671228002, 8813061212

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्। अधनस्य कुतो मित्रमभिप्रस्य कुतः सुखम्।

शन्नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः।

जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः॥ यजु. 21/10

ऋषिः-आत्रेय, देवता-ऋत्विजः, छन्दः भुरिक पंक्तिः

तेजस्वी विद्वान् शीघ्रता से कार्य करने वाले अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ, जो सदैव हमारे लिए हितकारी हों। वे हमारे (काम, क्रोध, लोभ-मोह आदि) शत्रुओं को नष्ट करके जैसे सूर्य अंधकार को नष्ट करता है, वह हमें शरीर और आत्मा के सभी रोगों से मुक्त कराएं।



Brilliant People who are swift in action, who are experts in various fields, be always beneficial to us, they eliminate our foes (kam, krodh, lobh, Moha etc.) as the sun destroys the darkness. They make us free from all the ailments of soul and body.